गहने

कुवेंपु

अनुवादक: डॉ. एम. विमला

1. बेटी रंगीन कपड़े और गहने क्यों नहीं चाहती ?

बेटी रंगीन कपड़े और गहने नहीं चाहती क्योंकि रंगीन कपड़े पहनकर अपनी सहेलियों के साथ नहीं खेल सकती क्योंकि खेलने से कपड़े मैले हो जाएँगे इसलिए वह रंगीन कपड़े नहीं चाहती। सोने से के बने हुए गहने पहने से तकलीफ होती है। इसलिए रंगीन कपड़े और गहने नहीं चाहती। कवि बच्चों को प्रकृति की गोद में खेलने और सहज रूप से जीवन बिताने की आकांक्षा को सुंदर रूप से व्यक्त करते हैं।

2. 'गहने' कविता के द्वारा कवि ने क्या आशय व्यक्त किया है ?

'गहने' कविता के द्वारा कवि इस प्रकार संदेश देना चाहता है। बच्चों को प्रकृति की गोद में खेलने और सहज रूप से जीवन बिताने की आकांक्षा को सुंदर रूप से व्यक्त करते हैं। माँ और बेटी एक दूसरे के गहने बनते हैं। बेटी अपनी माँ की ममता और अपना बचपन खोना नहीं चाहती है। कीमती चीज़ों को पहने से कोई खुश नहीं रह पाता इसलिए बेटी अपनी आज़ादी को रोकने वाली चीजें पसंद नहीं करती।

III 1. ताकि दिखाई दो सुंदर, बहुत ही सुंदर-यों कहती हो
सुंदर लगे किसको, कहो माँ ?
देखने वालों को लगता है सुंदर, देता है आनंद;
मगर मुझे बनता है बड़ा बंधन !

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश को हमारे पाठ्यपुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गहने' कविता से लिया गया है। इस कविता के रचयित कुवेंपु और अनुवादक डॉ. के.एम. विमला हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि माँ और बेटी के रिश्ते का महत्व वर्णन करते हैं।

स्पष्टीकरण :- बेटी सोने के गहने और रंगीन कपड़ों की जरूरत पर सवाल करती हुए अपनी माँ से पूछती है "माँ तुम कहती हो कि सोने के गहने और रंग बिरंगे कपड़े पहने से मैं खूबसूरत दिखती हूँ। लेकिन किसको? देखने वालों को खुशी होगी पर मेरे लिए यह दोनों बंधन हैं। मेरी आज़ादी को रोकने वाली चीज़ें मुझे पसंद नही हैं।"

विशेषता :- इस कविता में कवि बच्चे प्रकृति में सहज रूप से खेलने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं।

Scanned with CamScanner